पद भाग क्र.९

३९ :– सोग निवारण को अंग
४० :– बिन भेदी को अंग
४१ :– मन समझावन को अंग
४२ :– भक्ति कमावन को अंग
४३ :– गुरा का बधावा को अंग
४४ :– विपरीये को अंग
४५ :– पोढ्णो जिमाणो को अंग
४६ :– समानता को अंग
४७ :– अबधू को अंग
४८ :– मन की शोभा को अंग
४९ :– निंदक को अंग
५० :– निर्गुण भक्ति को अंग
५१ :– ब्रम्ह विचार को अंग
५२ :– ब्रम्ह मेहेमा को अंग
५३ :– स्वामी ने ओलबा को अंग
५४ :– होरी को अंग
५५:– मन पर अरजी का अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

३९

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	हंस चल्या घर आपणे १४०	१
२	संतो भाई बिणस्यां सोच न किजे ३४१	१

४०

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	साधो प्रीत न छिप्पे छिप्पाई ३२२	२
२	संतो ओ दु:ख किण सूं कहिये ३६६	४

४१

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	धोबीया रे दरगा जाणे मोय १०९	४

४२

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	संतो भाई सो जन भगत कमावे ३४६	६

४३

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.

४४

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	उपज खपे अे जीव ४१०	७

४५

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.

४६

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	पांडे ब्राम्हण कुण बिध बागा २५९	८

४७

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अबधु बिन कळ बालक पाया ०९	९
२	अबधु ऊद बुद रीत कहाँ ही १२	१०
३	रे अबधु सो बाळक हम पाया ३००	११
४	रे अबधु सो कन्याँ हम पाई ३०१	१२

४८

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.

१	मन रे आछी करी ते बीर २२०	१३
	४९	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	भगत भेद नहि जाणे अेतो ७५	१४
२	अे मूरख भेव न दुनियाँ जाणे ११८	१५
३	पिंड्त आंधारे भेद न बूझे २७६	१५
	५०	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	कोई अेसा हो जन संत सुजाण २०६	१६
	५१	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	अबगत हरी सब ऊपरे हो १३	१८
	५२	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	धिन धिन हो धिन परम धाम १०१	१८
	५३	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	इण मन कूं दोस न कोय १५६	१९
२	ऊठ परोडे मांगणे ४११	२०
	५४	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	रंग में खेलूं रामया सूँ होली २९८	२१
२	सईयाँ खेलो फाग होरी आई ३२४	२२
३	सुन मे खेलूं साहेब संग होरी ३८९	२३
	५५	
अ.नं.	**पदाचे नांव**	**पान नं.**
१	प्रभुजी मै हार चल्या इन मन सुं २८०	२४

१४०

|| पदराग बिलावल ||

हंस चल्या घर आपणे

हंस चल्या घर आपणे || मत रोवो भाई ||

ज्या वाँसुं याँ भेजिया || त्याँ लिया बुलाई || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हंस जिस घर से आपके घर में भेजा था, उस घर में वापस बुला लिया इसलिए वापस अपने घर गया। इसमें रोने सरीखा क्या हुआ?इसलिए घर से कोई अपने घर चले गया तो कोई रोवो मत। ।।टेर।।

खेल मंडयो बाजार में || सब जोवण जावे ||

देख तमासो फिर चले || नट क्युँ पिस्तावे || १ ||

बाजार में नट ने नाट्क तमाशा बनाया है और वह नाट्क तमाशा देखने सभी लोग जाते। नाटक तमाशा समाप्त होनेपर सभी लोग अपने-अपने घर लौटते उसमें नट कभी नहीं पछ्ताता। इसी प्रकार आपके घर से कोई निकल जाता तो आप क्यों पछ्ताते?।।१।।

राछ माल थाथी धरे || बरते नर माया ||

आण समाळे ले चले || क्यूं बेदल भाया || २ ||

कुछ समय धन माल एवमं औजार संभालने के लिए कोई किसी के यहाँ रखता और जरुरत पड्ने पर धन माल एवमं औजार संभालकर फिर ले जाता उसमे धन-माल एवमं औजार वापस देनेवाले को उदास होने सरीखा क्या है?।।२।।

सांपे गाया संग चले || सब गवाल चरावे ||

धणी बिछोडे आण के || क्यूं गवाळ ढिरावे || ३ ||

ग्वाला घर-घर की गायें जंगल में चारा चराने के लिए साथ में ले जाता,वहाँ गायें चारा चरती और उसमें से एखाद गाय का मालिक अपनी गाय अन्य गायोंसे न्यारी कर घर ले जाता उसमें ग्वाले को रोने सरीखा क्या है? ।।३।।

मेळे मे सुखराम केहे || सब ही चल आवे ||

लेवा देवा को गती || फिर पीछा जावे || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसे मेले में गाँव गाँव के,घर-घर के लोग इकठ्ठा होते और वहाँ पर लेने देने का व्यवहार करते और वापस अपने-अपने घर जाते उसमे मेला आयोजित करनेवाले को रोने सरीखा क्या है? ऐसा ही रामजी ने घर-घर में हंसो को जन्म दिया है उसमें से किसी हंस को रामजी बुला लेते इसमे अन्य हंसों ने क्यों रोना चाहिए? ।।४।।

३४१

|| पदराग बिहगडो ||

संता भाई बिणस्यां सोच न किजे

संता भाई बिणस्यां सोच न किजे ||

क्रता करे सो सबसें ई आछी ।। आणंद मगन मे रीजे ।। टेर ।।

कुटुंब परिवार का सदस्य देह छोड जाने पर संतभाई दु:खी होते इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संत भाईयो को समझाते है कि ,अरे संतोभाई,कुटुंब,परिवार से देह का विनाश होवे इतना भारी बिघड जाने पर भी सोच,फिकिर मत करो। कर्ता याने परमात्मा साहेब जो भी करता वह सबसे ही अच्छा करता, यह सच्चाई समझ के आनंद मगन में रहो। ।।टेर।।

मात पिता सुत नार कुलंत्तर ।। सब क्रतार बणाया ।।
साहेब दम आव लिख दीनी ।। हुकम बंध्या सब आया ।। १ ।।

मात,पिता,सुत,नार,कुलंतर ये सभी सतस्वरुप कर्तार ने बनाया। कर्तार साहेब ने ही हर एक देह के साँस लिखे मतलब आयु ठहराई और उसके हुकुम से ही सभी जीव एक घर में इकठ्ठा आए है। ।।१।।

सांई रखे ज्हा हंस रेवे ।। ज्हा भेजे तहां जावें ।।
तारे राम जनम दे करता ।। हर मारण कूंई आवे ।। २ ।।

साई हंस को जहाँ रखना चाहता वही हंस रहने जाता तथा वहाँ से निकालकर हंस को जहाँ भेजना चाहता वही जाता। रामजी ही हंस को भवसागरसे तारता रामजी ही हंस को होनकाल में जन्म देता और दिए हुए साँस पूरे होने के बाद रामजी ही जीव को देह से बाहर निकालता। ।।२।।

तीन लोक बाजी हर मांडी ।। जनम मरण हे गेलो ।।
यामे दुखी हुवो मत कोई ।। ग्यान बिचार सेहेलो ।। ३ ।।

३ लोक की सृष्टि बनाने की बाजी रामजी ने ही मांडी और जन्मने का तथा मरने का तथा मोक्ष पाने का रास्ता बनाया है। यह ज्ञान के विचार से देखो और मरने के दु:ख से दु:खी मत होओ और ज्ञान के समझ से सहलो और आनंद मगन में रहो ।।३।।

देख बिचार ग्यान कर सारी ।। द्रब द्रष्ट सें जोवो ।।
के सुखराम आप बस नाही ।। तां कूं भूल न रोवो ।। ४ ।।

माया का,मोह,ममता का अज्ञान त्यागकर सतज्ञान के दिव्यदृष्टी से पूरे सोच बिचार से देखो कि,जब जन्मना ही हंस के बस नहीं तो मरना यह हंस के खुद के बस कैसे रहेगा?इसलिए मरने सरीखा बिनस भी गया तो भी ना समझ में किसी के मरने पर भूल से भी मत रोओ। ।।४।।

३२२

।। पदराग भैरू (प्रभाती) ।।

साधो प्रीत न छिपे छिपाई

साधो प्रीत न छिपे छिपाई । मूंगी बस्त कूं सुंघी जाणे । हाण नफो नहीं भाई । टेर ।

मँहगे वस्तू की परीक्षा न होने कारण उस महँगी वस्तु को सस्ती जानता उसमें उसका

नुकसान है,नफा नहीं है। ऐसे ही संतों से प्रिती नहीं है यह छुपाने से भी छुपती नहीं। ।टेर।

तन मन धन कूं अर्पज देवे ।। रेण न राखे काई ।।
ब्हो अस्तुत बीणती कर हे ।। दास लछण अे भाई ।। १ ।।

संतों को तन,मन,धन अर्पण करता। अर्पण करने में जरा सी भी कसर नहीं रखता और बहुत स्तुति तथा विनंती करता। यह भी करना संतोंसे प्रित करना नहीं है,यह करना दासभाव है। ।।१।।

संसारी सगपण कूं जावे ।। प्रीत सो लगे लगाई ।।
गिरी खोपरा ओर दमेदा ।। रिपियां खोळ भराई ।। २ ।।

संसारी सगाई को जाते,दामाद से प्रिती लगने कारण नारियल,सुकामेवा और पैसोंसे दामाद की खोल भरते ऐसी प्रिती सतगुरु से आनी चाहिए। ।।२।।

चित्त चित्रावण पारस लाभे ।। घर मे मेले आई ।।
पारख बिना मोल नहीं आवे ।। ज्युं आवे त्यूं जाई ।। ३ ।।

जैसे किसी को चित्त चिंतामणी मिल जाता परंतु मिलनेवाला ना समज होनेकारण चित्त चिंतामणी को अन्य पत्थर के समान पत्थर समझता। उसने मन में चितवन करने पर जो चितवण करेगे वैसा प्रगट होता यह पारख नहीं थी इसलिए उसको अन्य पत्थरों के समान घर में रख दिया। ऐसे ही किसी को पारस पत्थर मिलता परंतु पारस पत्थर यह महँगी वस्तु है,लोहे को स्पर्श करते ही लोहे का सोना कर देती फिर भी जिसे पारस मिला,उसे उसकी परीक्षा न होनेकारण वह घर में अन्य पत्थरों के समान उपयोग में लाता और जैसा मिला था वैसा ही वापस चले जाता। ।।३।।

राम राम मुख लेणे लागो ।। संता सुं प्रीत न कोई ।।
जब लग रूळियो पच पच जावे ।। माय उदे नहीं होई ।। ४ ।।

सतगुरु से प्रिती नहीं है और रामनाम मुख से पच पच कर ले रहा है और रामनाम लेने में घट में नाम उदय होने के लिए हैरान होकर थक रहा है फिर भी नाम घट में प्रगट नहीं होगा। ।।४।।

हाड बडयां बिन रसी न आवे ।। घर मे सूर न होई ।।
के सुखराम चाकरी बीना ।। पटा न पावे कोई ।। ५ ।।

वीर पुरुष घर में बैठा है उसे राजा पट्टा नहीं देता। वह रण में जाकर शुरवीरता से लढता और लढेने में हड्डियाँ कटती उसमें रस्सी पैदा होती,जब उसे राजा जमीन पट्टा देता। जो राजा की इसप्रकार की चाकरी नहीं करता उसे राजा जमिन पट्टा नहीं देता। ऐसेही सतगुरु से प्रित करता,कुटुंब,परिवार,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,देवी देवता,समाज आदि के दु:ख सहता तब उसके घट में रामनाम प्रगटता। ।।५।।

संतो ओ दु:ख किण सूं कहिये
संतो ओ दु:ख किण सूं कहिये ।।
ऊंडी मार मरम तन माही ।। आठ पोहोर किम सहिये ।। टेर ।।

संतों,मैं मेरा दु:ख किससे कहूँ, मेरे उरमें अष्टोप्रहर गहराई तक मर्म भेद का मार याने परमात्मा प्राप्ती का मार लग रहा है। यह मार मुझसे सहे नहीं जा रहा। यह दु:ख किसको बताऊ यह मुझे चिंता हो रही है । ।।टेर।।

जग सूं कहयां सरे नहीं काई ।। ना वे बेदना जाणे ।।
हांसी करे सकळ सो दुनिया ।। फिर फिर निंदा ठाणे ।। १ ।।

यह बात संसार के लोगो को बताता हूँ तो कोई भी उसपर उपाय नहीं बताते और मेरी वेदना समझते नहीं इसलिए समझाने पर भी मुझे उन्हें पूरी समझाते नहीं आती। इसलिए वे मेरी हँसी करते और घूम-घूमकर याने रह रहकर मेरी निंदा करते ।।१।।

किस कूं कहुं दरद मेरा की ।। भेदू मिले ना कोई ।।
सब सेंसार भेष जन ढूंढया ।। सब माया का होई ।। २ ।।

मैं अब यह दर्द किसको कहूँ?दर्द जाननेवाला भेदू मिलता नहीं। मैंने सभी संसार के ज्ञानी,ध्यानी,पंडित भेषधारी ढूँढे,वे माया तक ही जानते। माया के परे का देश नहीं जानते इसलिए मैं उन्हें मेरा दर्द बताता तो भी समझता नहीं। ।।२।।

बिना आग सकळ तन दाझे ।। बिन माऱ्यो मन रोवे ।।
क्हे सुखराम इसो कोई जुग मे ।। मेरा दु:ख कूं खोवे ।। ३ ।।

आग के बिना मेरा सारा शरीर उस दर्द से जल कर राख हो रहा है। मेरा मन बिना मारे ही रौंद रौंद के रो रहा है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसा कोई जगत में है क्या?जो मेरा यह दु:ख नाश करेगा। ।।३।।

१०९

।। पदराग केदारा ।।

धोबीया रे दरगा जाणो मोय
धोबीया रे दरगा जाणो मोय ।।
साहेब जीरो द्रसण करणो ।। रेणो सन्मुख होय ।। टेर ।।

साहेब याने-परमात्मा
दरगा याने-दसवेद्वार
सन्मुख रहना याने-साहेबजी के साथ दसवेद्वार में रहना
पाँचो बस्तर याने-पाँच तत्व का देह
धोबी याने-साहेबजी के ओर पहुँचानेवाला जीव का मन
धोबन याने- साहेबजी के ओर पहुँचानेवाली जीव की सुरता
रंगरेजा याने-साहेबजी के ओर पहुँचानेवाला जीव का चीत

मैल–याने जीव के साथ पाँच तत्व के देह के रोम–रोम में बुरी तरह फैली हुई विकारी विषय वासनाएँ।

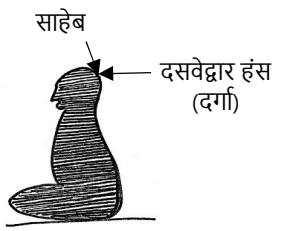

जीव अपने मनरुपी धोबी को कहता है कि अरे मन,मुझे दरगा याने दसवेद्वार में जाना है। वहाँ दरगा याने दसवेद्वार में साहेबजी रहते है। ऐसे दसवेद्वार में जाकर मुझे साहेबजी के दर्शन करना है और मुझे सदा के लिए उनके सन्मुख रहना है याने उनके साथ दसवेद्वार में रहना है। मैं जन्मो जन्म से साहेबजी के बेमुख होनेसे विषय विकारी माया में भारी लंपट हो गया हूँ। जिससे मेरे आकाश,वायू,अग्नी,जल,पृथ्वी इस पाँच तत्व के देह के रोम–रोम में शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन पाँचो विषय विकारों का भारी किट जम गया है। इन विकारी मैल के कारण मैं साहेबजी के सन्मुख जा नहीं पा रहा। ।।टेर।।

पाँचू बस्तर धोय बेगा ।। ढील न कीजे जाय ।।
पटक पीछाँटर अेसा धोई ।। मेल रहे नहीं माय ।। १ ।।

इसलिए हंस मनरुपी धोबी को कहता है कि,अरे मन,यह मेरे आकाश,वायू,अग्नी,जल, पृथ्वी इन पाँच वस्त्रोंसे बना हुआ यह शरीररुपी वस्त्र का रोम–रोम शब्द,स्पर्श,रुप, रस, गंध इन वासनिक विकारोंके किट से अति मैला हो गया। जैसे जगत में मैले वस्त्रोंको साफ करने के लिए धोबी झाड–फटकार कर अच्छा धोता और वस्त्रोंको जरासा भी दागी रहने नहीं देता। इसी प्रकार हे मन,मेरा आकाश,वायु,अग्नि,जल,पृथ्वी इन पाँच वस्त्रोंसे बना हुआ देह जल्दी धो दे। इस वस्त्रोंसे देह को धोने में जरासी भी ढिलाई मत कर। ये पाँचो वस्त्रोंको झाड–फटकार कर ऐसा धो की उसमें पाँचो विकारी वासनाओंका जरासा भी दाग मत रहने दे। ।१।

धोबी धोबण धोवण चाल्या ।। पुरब दिसारी बाट ।।
अरध ऊरध का मार पिछाँटा ।। नाभ कँवळ के घाट ।। २ ।।

जगत में जैसे धोबी और धोबन वस्त्रोंका मैला पिंछाटे मार–मार कर निकालने के लिए धोबी घाट जाते। इसीप्रकार मेरा मनरुपी धोबी और सुरतारुपी धोबन पूर्व दिशा के रास्ते से नाभ कँवल के घाट जाते। वहाँ रामनाम के जल में भिगो–भिगो के आती–जाती साँस के पिंछाटे मारते और पिंछाटे मार मारकर विषय वासनाओंके पाँचो विषयोंके मैलोसे देह को साफ कर देते।(पाँचो विषय आत्मा हंस से नाभी में बिछड जाती।)।।२।।

रंगरेजा तूं आव बेगो ।। पाँचा के रंग दिराय ।।
अेसो रंग गरक दे भाई ।। ब्होर न ऊतर जाय ।। ३ ।।

जगत में जैसे वस्त्र धोबी धोबन धो देते फिर उन वस्त्रोंको रंगरेजा उतर न जानेवाला गाढा रंग देता वैसे मन धोबी और सुरत धोबन जीव के पाँच वस्त्र के देह को स्वच्छ करने के बाद पाँचों वस्त्रो के देह को साहेबजी के ज्ञान विज्ञान का जल्दी रंग देने को चित्त

रंगरेजा को आने को कहते और रंग वापस उतरेगा नहीं मतलब फिरसे पाँच विषय विकारों में यह देह पडेगा नहीं ऐसा साहेबजी का ज्ञान विज्ञान का गाढा रंग देने को कहते। ।।३।।

सूरत धोबण मनवो धोबी ।। चित्त रंगरेजो मांय ।।
के सुखदेवजी याँ तीनू मिल कर ।। कसर न राखी काय ।। ४ ।।

जगत में जैसे धोबी,धोबण और रंगरेजा वस्त्रोंका मैल निकालने में तथा वस्त्रोंको गाढा रंग देने में कसर नहीं रखते वैसे मन धोबी और सुरता धोबण देह को पाँचों विकारी वासनाओंके किट से स्वच्छ करते और चित्त रंगरेजा ने:अंछर ज्ञान विज्ञान का पक्का रंग देता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मन,सूरत,चित्त ये तीनो मिलके मेरे पाँच तत्तरुपी वस्त्र के देह को विकारोंसे साफ करने में और ने:अंछर का ज्ञान विज्ञान का रंग देने में जरासा भी कसर नहीं रखते। ।।४।।

३४६

।। पदराग दीपचन्दी ।।

संतो भाई सो जन भगत कमावे
संतो भाई सो जन भगत कमावे ।।
मन के हाथ पवन की डोरी ।। सुरत निरत घर लावे ।। टेर ।।

संतो भाई,वही जन सतस्वरुप की भक्ति कमाएगा जो मन के हाथ में साँसो की डोरी देकर सूरत और निरत को विषय विकारों में न उडने देते भक्ति के घर लाएगा। ।।टेर।।

पाँचु पिसण पग तळ देवे ।। बीस पाँच घर लावे ।।
नित नारी सुं नेह दूणो ।। अे निस सेज रमावे ।। १ ।।

पाँचो विषय इंद्रियोंको पैरो के नीचे देकर तोडेगा और पच्चीस विषय प्रकृतियोंको भक्ति के घर लाएगा। जैसे पती-पत्नी के साथ रात-दिन प्रेम करता और नित्य साथ में सेज पर याने पलंग पर रमता ऐसे मन सूरत के साथ नित्य रम रहा। ।।१।।

आसण इड्ग अडोल नेहेचे ।। मन मारे तन माय ।।
नवसे नार जगावे सूती ।। सहर रहे लिव लाय ।। २ ।।

मैंने आसन अडीग,निश्चल,अडोलन किया और मन के विषय वासनाओंको मारकर मन को तन में भक्ति में लगाया। सोई हुई नौसो नाड्योंको चेताया और शरीर के पूरे रोम-रोम से भक्ति में लिव लगाई । ।।२।।

मन की बात न माने कोई ।। ग्यान कहे ज्याँ जाय ।।
जन सुखराम गुरां की अग्या ।। रहे राम लिव लाय ।। ३ ।।

मन की विषय विकारोंकी एक भी बात न मानते संत ज्ञान की हर बात मैं मानने लगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु की आज्ञा से मेरे घट में राम की लीव लग गई। ।।३।।

४१०

।। पदराग मंगल ।।

उपज खपे अे जीव

उपज खपे अे जीव ।। किणी बस जाणिये ।।
याँ को करो बिचार ।। ग्यानी सो ठाणिये ।। १ ।।

प्रश्न–ये जीव उत्पन्न होते है और मरते है तो वे जीव किसके वश है?

उत्तर–जीव उत्पन्न होता है और मरता है यह वासना कर्मो के वश है।

राम हुवे जिव आण ।। कोहो क्या धारणे ।।
उलट ब्रम्ह हुवा जाय ।। तिको किण कारणे ।। २ ।।

प्रश्न–यह जीव राम था याने ने: कर्मी ब्रम्ह था तो क्या धारण करने से राम का याने ब्रम्ह का जीव याने माया बना?

उत्तर–यह जीव आदि से ब्रम्ह था। यह इंद्रियोंके रस भोगने के लिए पारब्रम्ह होनकाल में से नीचे उतरकर माया में आया और माया में ब्रम्ह का जीव बना। पारब्रम्ह होनकाल में ब्रम्हरुपी जीव को सुख और दु:ख कुछ नहीं थे और जीव के मन में पाँचो इंद्रियोंके रसो की भोगो की चाहना थी इसलिए पारब्रम्ह होनकाल से जीवरुपी ब्रम्ह नीचे माया में उतरकर जीवरुपी माया बना।

प्रश्न–और यह जीव उलटकर जीव का ब्रम्ह होना चाहता तो वह जीव किस कारण से जीव का फिरसे ब्रम्ह होना चाहता?

उत्तर–यह जीव गर्भ और जांजलीमान काल के भयंकर डर से जीव का जीव न रहते जीव का ब्रम्ह होना चाहता।

पुरष होवे सो कोण ।। मेरी को नार हे ।।
याँ को करे जो बिचार ।। सोई जन तार हे ।। ३ ।।

प्रश्न–पुरुष कौन होता और स्त्री कौन होती है?

उत्तर–(जीव)ब्रम्ह ही पुरुष होता है और(जीव)ब्रम्ह ही स्त्री होती है। ब्रम्ह ही पुरुष होता है और ब्रम्ह ही स्त्री होती है इसका जो सतज्ञान से विचार करेगा वही भवसागर से तिरेगा। माया में आते ही पुरुष और स्त्री की स्थिति क्यों बनी?पारब्रम्ह होनकाल में जहाँ थे वहाँ तो विषम स्थिति नहीं थी और वह यहाँ नीचे आते ही यह सम स्थिति बिघड कर विषम हो गयी। बिघड गयी तो आगे कभी भी सम होगी ही नहीं मतलब जीव के दु:ख तो कभी जाएँगे ही नहीं और तृप्त सुख कभी भी मिलेंगे ही नहीं यह सतज्ञान जिसे समझेगा वही संत यह माया का देश त्यागकर जहाँ सम स्थिति के सुख है,तृप्त सुख है ऐसे सतस्वरुप के देश जाएगा। विषम स्थिति में सदा अतृप्त सुख रहते तो सम स्थिति में तृप्त सुख रहते यह सतज्ञान कहता है।

पेली माय कन बाप ।। अरथ ओ किजिये ।।
माया मूळ बिचार ।। कूण सो लीजिये ।। ४ ।।

प्रश्न–पहले माँ उत्पन्न हुई या बाप यह मुल ज्ञान समझाओ?
उत्तर–आदि में मूल में सभी ही जीव ब्रम्ह ही थे। आदिसे सभी देह गर्भ में न बनते कला से बने। माँ–बाप यह फरक मूल ब्रम्ह के प्रकृति में नहीं रहता। मूल ब्रम्ह सभी के सरीखे है और सरीखे ही रहेगे। जैसे आज माँ–बाप याने स्त्री पुरुष ये अलग अलग माया देह के दिखते वैसे ही फरक मूल ब्रम्ह के मन और पाँच आत्मा इस माया में आदि था। जिस जीव का मन और पाँच आत्मा आदि में पुरुष प्रकृति का था वह पिता बन गया और जिस जीव का मन और पाँच आत्मा स्त्री प्रकृति का था वह माता बन गयी। यह पुरुष–स्त्री बनने की रीत मूल ब्रम्ह के कारण नहीं बनती और यह अपने–अपने मन,पाँच आत्मा के प्रकृति के कारण बनती है। जब सृष्टि की रचना हुई तो माँ–बाप दोनो अपने–अपने मन और पाँच आत्मा के प्रकृति से जोडी से कला से जन्मे। एक पहले या दूजा बाद मे ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ।

जीव कितेइक तोल || किसे उनमान हे ||
के सुखदेव ओ भेद || तहाँ सत ग्यान हे || ५ ||

प्रश्न–माया का मूल कौन है?
उत्तर–माता–पिता यह अलग अलग शरीर बनने का मूल मन और पाँच आत्मा की मुल प्रकृती यह है। जो मन और पाँच आत्मा पुरुष प्रकृती की होगी वह पुरुष बनेगा और जो मन ,पाँच आत्मा स्त्री प्रकृती की होगी वह स्त्री बनेगी।
प्रश्न– जीव कितना और उसका वजन और अनुमान कौनसा?
उत्तर–सभी जीव अति सुक्ष्म है। वे कोई भी काटे पर तोले नहीं जाते परंतु जीव के ब्रम्हतत्व की पहुँच तीन लोक १४भवन,तीन ब्रम्ह के तेरा लोक तथा पुर्ण सतस्वरुप लोक में समाती इतनी है परंतु जीव के मन तत्व की पहुँच सिर्फ तीन लोक चौदा भवन तक है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जिसे सतज्ञान का भेद समझता वही जीव के ब्रम्ह तत्व और मन तत्व के पहुँच का फरक समझता। वही ब्रम्ह तत्व स्वभाव का अमर और अखंड्ति,अमर्यादित सतस्वरुप देश के सुख खोजता और मन स्वभाव के मरनेवाले और तीन लोक चौदा भवनतक के मर्यादा के सिर्फ सुख देनेवाले देश को त्यागता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले।

२५९

|| पदराग सोरठ ||

पांडे ब्राम्हण कुण बिध बागा
पांडे ब्राम्हण कुण बिध बागा ||
चारूं वरण नख चख अेकी || अेक कंठ अेक रागा || टेर ||

अरे पंड्ति,तुम ब्राम्हण किस विधी से बाजते हो। ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य और शुद्र इन चारो वर्णो के नर–नारी के नख सरीखे है,चक्षु सरीखे है,कंठ सरीखे है,कंठ से निकलनेवाली

राग सरीखी है फिर चारो वर्णो में तुम्हें शुद्र न बाजते ब्राम्हण बाजते इसका क्या कारण? ।।टेर।।

सामी कहो कोण बिध क्राया ।। किम जंगम किम जोगी ।।
केसे दर्शण ब्रण बिचारा ।। किम त्यागी किम भोगी ।। १ ।।

स्वामी किस विधी के कारण कहलाये?जंगम,जोगी,किस विधी से कहलाये,छः दर्शन किस विधी से बने?चार वर्ण अलग अलग किस विचार से बने?त्यागी कैसे बने?और भोगी कैसे बने?सभी में ब्रम्ह तो एक सरीखा है फिर ये अलग अलग कैसे बने? ।।१।।

राजा राव पातशा जुग रे ।। पूजा पत किम बाधा ।।
ऊँच निच अर नारी पुरूष ।। काळ कोण बिध खाधा ।। २ ।।

राजा कैसे हुआ,राव कैसे हुआ और संसार में बादशहा कैसे हुआ और अलग अलग पुजापाठ में कैसे बाँधे गए?सभी में एक ही ब्रम्ह है फिर एक आदमी एक की पुजा करता है और एक पुजवाता है। सभी में एक ही ब्रम्ह है ऐसा रहने पर ये कैसे बाँधे गए?सभी में एक ही ब्रम्ह है फिर उंच और निच कैसे हुए?स्त्री और पुरुष अलग अलग कैसे हुए?सभी में एक सरीखा ब्रम्ह है फिर ब्रम्ह को काल ने किस विधी से खाया? ।।२।।

अे सब अर्थ बिचार कर चरचा ।। कुळ मारग में आवे ।।
कह सुखराम नहीं तो तम ही ।। सबही सुदर कहावे ।। ३ ।।

सभी कुल में जिस मार्ग से जन्मते है वह मार्ग सभी का एक है और वह मार्ग शुद्र है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इसप्रकार जन्मने के मार्ग कारण सभी शुद्र है, कोई ब्राम्हण नहीं इसका सभी सोच विचार करो ब्राम्हण तो सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान जानोगे तो ब्राम्हण बाजोगे । ।।३।।

०९

।। पदराग सोरठ ।।

अबधु बिन कळ बालक पाया

अबधु बिन कळ बालक पाया ।। ता संग करम मिटायाँ ।। टेर ।।

अबधू,माया की कोई कला न करते मैंने सतशब्दरुपी बालक शुन्न शिखर में पाया। उसके संग से मेरे सभी कर्म मिट गए ।।टेर।।

मात पिता बेन नहिं भइया ।। जात पात नहिं जाया ।।
सुंनं सिखर में बालक खेले ।। रूप रंग नहि काया ।। १ ।।

उस बालक को अपने सरीखे माता,पिता,भाई,बहन,जात पात नहीं है। वह हमारे सरीखा जन्मा भी नहीं है। यह बालक शुन्न शिखर में याने दसवेद्वार में खेल रहा है। उसे पाँच तत्व की काया नहीं है या हमारे सरीखा रुप,रंग नहीं है। ।।१।।

हसता नहि कहे कुछ नाही ।। ना मुझ कूं बोलाया ।।
ता संग मगन भया मन मेरा ।। जुग तज सरणे आया ।। २ ।।

वह बालक हँसता भी नहीं,कहता भी कुछ नहीं,ना मुझसे बोलता। उससे मिलनेवाले सुखसे,मेरा मन मग्न हो गया। मैं तीन लोक चौदा भवन के सभी देवता त्यागकर उसके शरण आया। ।।२।।

बाळक बोहोत अनोप अजब हे ।। बिन नेणा दिख लाया ।।
ता कूं शेंश महेसर ध्यावे ।। सो गुरू मोहि लखाया ।। ३ ।।

यह बालक बहुत अनुप है,अजब है। मैंने उस बालक को बिना इस नयनों से देखा। इस बालक की शेषनाग,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति ये सभी आराधना करते यह मुझे मेरे गुरु ने गुरुज्ञान में दिखाया। ।।३।।

बाळक मिल्याँ मेर शिर कीनी ।। मो कूं कंठ लगाया ।।
जन सुखराम कटया भौ बंधन ।। ज्याँ का ज्याँ चल आया ।। ४ ।।

इस सतशब्द बालक ने मुझे कंठ से लगाया और मेरे सिरपर हाथ फेरकर मुझपर मेहर की तब मेरा भव बंधन कटा और जहाँसे याने सतस्वरुप बालक से मैं बिछ्डा था याने सतशब्द से बिछ्डा था उस दसवेद्वार में चला गया ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१२

।। पदराग सोरठ ।।

अबधु ऊद बुद रीत कहाँ ही

अबधु ऊद बुद रीत कहाँ ही ।। कोइ जाणेगा जन माँही ।। टेर ।।

अरे अबधु,अरे जोगी,अगम जाने की अदभुत रीत है। यह रीत जिसमें प्रगट हुई वही संत जानता,दूजा नहीं जानता। ।।टेर।।

आसण हमारा गिगन मंडळ में ।। रहुं जक्त के माँही ।।
मोही कूं मेरा जन जाणे ।। दूजा कूं गम नाहीं ।। १ ।।

मेरे प्राण का रहना दसवेद्वार में गगन मंडल में है और मेरा देह संसार में रहता है। यह मेरी अद्भुत रीत मेरे ही संत समझेंगे,दूजे नहीं समझेंगे । ।।१।।

रात दिवस रेण नहिं तारा ।। शशि अर सूरज नाँही ।।
जहाँ हम जाय बास घर कीया ।। अनहद घुरिया मांही ।। २ ।।

जिस गिगन में जाकर हमने घर किया वहाँ यहाँ के सरीखी रात-दिन,तारे,चाँद,सूरज कोई नहीं है। वहाँ सतशब्द की अनहद ध्वनि गरज रही है । ।।२।।

देवळ माँहि देवरां दरस्या ।। देव विराजे माँही ।।
हाथ न पाँव नेण नहि जिभ्या ।। मोह लिया मुझ ताँई ।। ३ ।।

शरीररुपी देवल में आत्मारुपी देवरा दिखाई दिया। उस आत्मारुपी देवरे में परमात्मा देव बैठा दिखा। उस परमात्मा को मेरे समान हाथ नहीं है,पाव नहीं है,आँखे नहीं है,जीभ्या नहीं है फिर भी उसने मुझे मोहित कर लिया है ऐसी उसकी अदभुत रित है । ।।३।।

आठँ पोहोर बतीसूं घडियाँ ।। हिल मिल बिछडत नाही ।।
अेक निमष जो न्यारा व्हे तो ।। तड़फड़ जीव कढाई ।। ४ ।।

यह देव आठोप्रहर,बत्तीसही घडी याने चोबीसो ही घंटे मेरे साथ हिलमिल के रहता। मेरे से पलभर के लिए भी बिछ्डता नहीं। ये देव मेरेसे पलभर के लिए भी अलग हो गया तो मेरा जीव तड्प-तड्पकर निकल जाता । ।।४।।

शिव सो जाय मिल्याँ सक्ति सूं ।। शिव मिल सक्त कहाई ।।
भँवर गुफा घर भेळा हूवा ।। खेलत हिल मिल माँही ।। ५ ।।

शिव याने शब्द और शक्ति याने सूरत ये दोनों भवर गुंफा में इक्छा मिलते और हिलमिल के त्रिगुटी में खेलते। ।।५।।

तां के परे अगम घर जाजे ।। जन मिलिया हे माँही ।।
जन सुखराम जणम नहि मरणा ।। उद बुद रीत कहाई ।। ६ ।।

इस भँवरगुँफा के परे अगम घर है। संत उस अगम घर में पहुँचते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते कि,उस अगम घर में जन्मना एवम् मरना नहीं है ऐसी अगम घर जाने की अदभुत रित है । ।।६।।

३००

।। पदराग सोरठ ।।

रे अबधू सो बाळक हम पाया
रे अबधू सो बाळक हम पाया ।।
घडिया घाट दिष्ट में आवे ।। सो सब आप बणाया ।। टेर ।।

रे अबधु,रे जोगी,मैंने अद्भुत बालक पाया। जो जो घाट दृष्टी में आते वे सभी घाट इस बालक ने घडाए । ।।टेर।।

ब्रम्हा बिसन महेसर देवा ।। शेंस महेस उपाया ।।
आद भवानी निरंजण कहिये ।। सो सब सरणे आया ।। १ ।।

ब्रम्हा,विष्णू,महेश ये सभी देव तथा शेषनाग आदि इस बालक ने बनाए। आद भवानी, निरंजन यह सभी उसके शरण में रहते। ।।१।।

अंछया आद गिगन हर पाणी ।। दाणु देव बणाया ।।
बोहो अवतार केते घर माँही ।। सब संग रमणे आया ।। २ ।।

उसने आद इच्छा,आकाश,वायु,अग्नि,जल,पृथ्वी और सभी राक्षस तथा देव बनाए। उसी ने सभी अवतार बनाए और वही सभी के संग रमने आया। ।।२।।

चवदे क्रोड जम जब राणा ।। धरम राय कूं उपजाया ।।
होणकाळ सब ही शिर कीया ।। जम काळ कुंई खाया ।। ३ ।।

उसने चवदे करोड जमदुत,चवदा जम और जमराज इन सभी को उपजाया। उसने पारब्रम्ह होनकाल को सबके सिर के उपर किया। यह होनकाल पारब्रम्ह जमराज पकड्कर उपजाये

हुए सभी घटो को खाता ऐसा होनकाल सभी के सिरपर पैदा किया। ।।३।।

सबका सिरजण सब सूं न्यारा ।। जनम सुख नहि जाया ।।
जन सुखराम घडे सोई भाँजे ।। तां के काम न काया ।। ४ ।।

सभी में ओतप्रोत भरा है फिर भी सभी से न्यारा है। यह घडाए हुए घाटो के समान जन्मा नहीं और मरता नहीं तथा उसे घडाए हुए घाटो समान काम विकार नहीं है या काया नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,वह घडा नहीं इसलिए भांगता नहीं। जो घडे जाता वही भांगता इसलिए होनकाल के महादु:ख भोगता। इसप्रकार यह सभी का उत्पत्ती कर्ता है। ।।४।।

३०१

।। पदराग सोरठ ।।

रे अबधू सो कन्याँ हम पाई

रे अबधू सो कन्याँ हम पाई ।। ताँ की अनंत बडाई ।। टेर ।।

अरे अबधू,अरे जोगी,मैंने घट में ऐसी कन्या पाई जिसकी महिमा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि किसीको भी करते नहीं आती ऐसी अनंत है ।।टेर।।

कन्याँ अेक बनोळे बैठी ।। ताँ के पाँच पची सुं हे भाई ।।
मैया बाप कडुंबो पाले ।। माडाँ लगन लिखाई ।। १ ।।

यह कन्या विवाह के लिए बनोळे बैठी। उसके पाँच और पच्चीस ऐसे तीस भाई बहन है। इस कन्या ने इच्छा माता,पारब्रम्ह पिता और कुल का विरोध करके जबरदस्ती से विवाह मंडाया। ।।१।।

राव रंक सो भूप पासता ।। बसती पाले आई ।।
सब ही पूछ पचे पच हाऱ्यां ।। लडकी न माने हे कोई ।। २ ।।

उसे राजा से लेकर प्रजा तक सेठ साहुकार से लेकर दरिद्री तक सभी बस्तीवालो ने उसे विवाह मांडने से रोका। सबही उसे समझा समझाकर हार गए परंतु लड्की किसीका मानी नहीं। ।।२।।

किन्या जोर समजणी कहिये ।। सुर नर मुनि मन भाई ।।
अपणो पीव आप ही हेऱ्यो ।। साँमी परणे जाई ।। ३ ।।

यह कन्या बहुत समझवान है। इस कन्या को ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,देवता,नर–नारी,ऋषी, मुनि कोई वर करके पाये नहीं। उसने अपना पति स्वयम ने हेरा और जो सर्व सृष्टि का स्वामी है उसे ही पति कर अपना विवाह रचा। ।।३।।

परणी जाय सेज सुख सोई ।। पीव परस कर आई ।।
जन सुखराम सेहर सब गोती ।। पाय पड़े सब भाई ।। ४ ।।

उसने स्वामी के साथ विवाह कर अनंत सुख सहज में पाये। ऐसे स्वामी के चलकर जब घर पर आयी और उसके सुख गोत्र के,नगर के सभी भाईयोंने देखे तब नगर,गोत्र और

भाई पैर में पड़ने लगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।४।।

२२०

।। पदराग केदारा ।।

मन रे आछी करी ते बीर

मन रे आछी करी ते बीर ।।

भवसागर में डूबतां कूं ।। कीया पेली तीर ।। टेर ।।

अरे मेरे बडे भाई मन,तुने मेरा बहुत ही अच्छा किया। मैं भवसागर में डूब रहा था। तुने मुझे भवसागर में डूबने से बचाया और भवसागर से पार करने की नामरुपी नैया बताकर अमरदेश पहुँचा दिया। ।।टेर।।

जुग की लारा डूब मरता ।। सेहता दुख सरीर ।।

बेहे मरता बेकाम ।। अेसे भवजळ मृग नीर ।। १ ।।

मेरे बडे भाई मन,तु नहीं रहता तो मैं संसार के विषय वासनाओंमें डूब मरता और इस शरीर से काल के अनेक दु:ख सहता। भवसागर के सुख ये मृगजल के समान है। प्यासे हिरण को रेतीले जमीन पर प्यास तृप्त करनेवाला पानी का सागर दिखता और प्यास बुझाने के लिए वह हिरण रेतीले जमीनपर दिखनेवाले सागर के ओर दौड्ता। हिरण जितना पानी के लिए सागर की ओर दौड्ता उतनाही वह पानी जैसे पहले दूर दिख रहा था उतने ही दूरी पर दिखने लगता। प्यासा होने के कारण वह जल नहीं है यह नहीं समझता और बिना सोचे समझे एक सरीखा वह सागर की ओर दौड्ते रहता। अंतिम में थक जाता और जमीन पर गिर जाता,फिर भी उसे वह सागर का जल हाथ में नहीं आता। अंतिम में प्यास के कारण मर जाता ऐसे ही मैं भी भवसागर में अस्सल तृप्त सुख खोजने में बेकाम बहकर मर जाता था। ।।१।।

चोरासी लख जूण धरता ।। पीता बिष की सीर ।।

धरमराय शिष वो ।। जड़ता काळ जंजीर ।। २ ।।

अरे मेरे बडे भाई मन,तू भवसागर से पार होने के लिए सतगुरु के पास ले जाता नहीं तो मैं चौरासी लाख योनियो में पड्ता वहाँ वही विषय रस पिता। जो मैंने मनुष्य देह में भर पेट पिये। इन विषयरसों के कारण धरमराज मेरे सिर पर अनेक मार मारता और काल मार देने के लिये जंजीर से बाँधकर जकड बंध करता। वे ही विषयरस चौरासी लाख योनि में पिता। ।।२।।

फूस कचरो फटक दीयो ।। सोझ लियो कण हीर ।।

ताय सोनो तार कीयो ।। काडयो खोट गंभीर ।। ३ ।।

अरे बडे भाई,मेरे जैसे जोहरी और सराफी फुस और कचरे में पडा हुआ हीरा तथा सोना, कचरा और फुस फटक कर अलग करते। सराफी सोने में तांबे की जो गंभीर खोट रहती वह तपा तपाकर निकाल देता ऐसे ही मेरे बडे भाई मैं विषय विकारों में भ्रमित हो गया

था। यह भ्रमित विषय विकारो की गंभीर खोट तुने मुझे ज्ञान समझा समझाकर निकाल दी और तृप्त सुखों के लिए मुझे सतगुरु के शरण ले गया। ।।३।।

नाँव निजतत्त नाम जुगमे ।। खेवट सतगुरू कीर ।।
दास सुखदेव मांय बेठा ।। भली बंधाई धीर ।। ४ ।।

जैसे जगत में सागर पार होने के लिए नाव रहती ऐसे सतगुरु के पास भवसागर पार करने की नामरुपी निजतत्त की नाव रहती। जैसे उस नैया में सागर पार करनेवाला बैठता ऐसा मैं भी नामरुपी निजतत्त की नाव में बैठा। सागर पार करने के लिए नैया चलानेवाला केवट होता वैसे भवसागर पार होने के लिए सतगुरु केवट बने। नैया में बैठे हुए यात्री सागर की लाटाये,जानलेवा प्राणी देखकर घबराते और सागर पार करना नहीं चाहते। इन घबराये हुए यात्रियों का नैया का केवट जैसे धीर बांधता और सागर के उस किनारे पहुँचा देता वैसे ही संसार के दु:ख और विषय विकारोंका सताना देखकर मैं अधिर होने लगा तब सतगुरु ने अमरलोक के सुखों का ज्ञान दे देकर धीर बांधा और भवसागर पार कर तृप्त सुख के अमर देश पहुँचा दिया। ।।४।।

७५

।। पदराग हिन्डोल ।।

भगत भेद नहिं जाणे अेतो
अे मुरख निंदा ठाणे रे ।। भगत भेद नहि जाणे हो ।। टेर ।।

ये मूर्ख लोग सतस्वरुप भक्ति का भेद जानते नहीं और जो सतस्वरुप की भक्ति करते उसकी निंदा करते। ।।टेर।।

ओ जुग अचेतन मुरख होई ।। साहीब नहीं पिछाणे हो ।। १ ।।

इस संसार के लोग अचेतन याने मुर्दोके समान है,मूर्ख है,जिसने इन को बनाया उस साहेब को नहीं जानते। ।।१।।

ग्यान शबद को अरथ न जाणे ।। हिये उपायर आणे हो ।। २ ।।

ये संसार के सभी लोग संतो के ज्ञान का और शब्दोंका मर्म नहीं जानते और भक्ति कैसे करना यह विधि नहीं जानते। वे अपने हृदय में जैसा ठीक लगेगा वैसा सतस्वरुप पाने का उपाय करते जिससे उनको सतस्वरुप नहीं मिलता। ।।२।।

आप आप की बुध्द प्रवाणे ।। किमत्त कसरा ठाणे हो ।। ३ ।।

ये संसार के लोग अपनी-अपनी बुध्दि प्रमाण से संतोंकी किंमत लगाते और संतों में रही कसर जगत को दिखाते। ।।३।।

के सुखराम नरका का ग्रामी ।। जुग रस बिषिया माणे हो ।। ४ ।।

ये मूर्ख लोग, संतों को हल्का समझते और विषय रस पेट भर पीते ऐसे सभी लोग नरक वासी है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

११८

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

अे मूरख भेव न दुनियाँ जाणे

अे मूरख भेव न दुनियाँ जाणे ।। अे फिर फिर निंद्या ठाणे रे लो ।। टेर ।।

ये दुनिया के मूर्ख लोग भक्ति प्रगटने के चिन्ह जानते नहीं इसकारण रह-रह कर जिसमें भक्ति प्रगट हुई उसकी निंदा,थट्टा मस्करी करते। ।।टेर।।

ब्याव बिरध सब गीत सुण के ।। हरष हरष सब आवे रे ।।

जा के काज किया नर अेता ।। ता की ठोड चलावे रे लो ।। १ ।।

शादि के नाच गीत सुनने में सभी को हर्ष आता और उस हर्ष के कारण सभी विवाह के जगह इकठ्ठा होते। ।।१।।

लडका लडकी परणर आया ।। सब ही आण सराया रे ।।

जब वाँ के ग्रभ ओदर बंधियो ।। सागट निंद्या लावे रे लो ।। २ ।।

लड्का-लड्की विवाह कर घर आते तब सभी संसार के लोग बहु को बहुत सराते। जब उस स्त्री के उदर में गर्भ बढता और उस गर्भ के कारण उस स्त्री का पेट अन्य स्त्रियों के पेट से बढा हुवा दिखता तब निंदक लोग उस स्त्री की निंदा करते । ।।२।।

यूँ ग्यानी पिंडत जुग सारा ।। चरचा ग्यान बखाणे रे ।।

निर्गुण शब्द चेन घर मांही ।। ताँ की निंद्या ठाणे रे लो ।। ३ ।।

ऐसे जगत के सभी ज्ञानी,पिंडत और नर-नारी है,ये ज्ञानी,पिंडत,नर-नारी निरगुण ज्ञान की घर-घर चर्चा करते और किसी संत में ये निरगुण शब्द के चिन्ह प्रगटते तो ये सागट उस संत की निंदा करते है। ।।३।।

जां बिध कूं मुख राम रटीजे ।। निस दिन हरि गुण गावे रे ।।

वा बिध हुवाँ दुनि सब डेके ।। निंद्या बोहो बिध लावे रे लो ।। ४ ।।

यह चिन्ह होने के लिए ज्ञानी,पंड्ति रामनाम रटते और रात-दिन हरीनाम गाते। रामनाम रटने में वह विधि किसी के घट में प्रगटी तो सभी ज्ञानी,पंड्ति उस संत की बहुत प्रकार से निंदा करते और संतों के घट में हुयेवे विधि को पांखड बताते,झूठा बताते। ।।४।।

ऊपर लो बोहारज झूठो ।। तां कूं सरब बखाणे रे ।।

के सुखराम पिंडत सब लोई ।। निर्गुण भेद न जाणे रे लो ।। ५ ।।

ये पंडित,ये ज्ञानी,सिर्फ सगुण का भेद जानते और सगुण से उपजनेवाले सिर्फ चिन्ह चरित्र जानते और इन सगुण से प्रगटनेवाले मोक्ष न देनेवाले झुठे चरित्रो की महिमा करते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,इन ज्ञानी,पंडितों को सगुण के परे के निर्गुण प्रगटने के चिन्ह चरित्र समझते नहीं इसलिए ये ऐसी निंदा करते। ।।५।।

२७६

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

पिंडत आंधारे भेद न बूझे

पिंडत आंधारे भेद न बूझे ।। ग्यानी कूं नहीं सुजे रे लो ।। टेर ।।

ये पिंडत,ज्ञानी अंधे है। ये सतस्वरुप का भेद पूछना यह भी जानते नहीं। ये पंडित,ज्ञानी माया में इतने भ्रमित हुए है कि उन्हें माया में काल है और काल के परे सतस्वरुप राम है यह सुझता नहीं ।।टेर।।

राम नाम कहे बोहोत ही अछा ।। चरचा जोर सरावे रे ।।
हर शिंवरण प्रतापज जागे ।। चेन देख दु:ख पावेरे लो ।। १ ।।

ये पंडित,ज्ञानी मुख से रामनाम लेना बहुत अच्छा है ऐसा कहते और रामनाम की चर्चा में बडी शोभा भी करते परंतु हरि के स्मरण के प्रताप से शिष्य में ध्यान लगना तथा घट में ३ लोक १४ भवन दिखना और ३ ब्रम्ह के १३ लोकोंके समान चरित्र दिखना आदि चरित्र दिखने पर पंडित दु:खी होता। ।।१।।

हीरो पारस के नर आछा ।। गुण की खबर न काई रे ।।
अणभेदी कूं आण बताया ।। प्रतन माने भाई रे लो ।। २ ।।

सभी लोग हीरा,पारस को बहुत अच्छा कहते है परंतु हीरा और पारस परखने का गुण मालूम नहीं है। जिसे हीरा,पारस की पारख नहीं ऐसे अणभेदी को हीरा और पारस बताते और अणभेदी देखकर वह हीरे को कांच का तुकडा और पारस को पत्थर समझकर छोड देते ऐसेही सतनाम की परीक्षा न रहने कारण रामनाम को आनंदपद प्राप्त कर देता यह मानते नहीं। ।।२।।

भोग बिलास कहे सब साचो ।। करसण जोर बखाणे रे ।।
वाँ का चेन रीत बिध देखर ।। मूरख निंद्या ठाणे रे लो ।। ३ ।।

भोग विलास सच्चा है ऐसा सभी कहते और अपने ज्ञान में भी ग्रहस्थी जीवन की शोभा करते परंतु भोग विलास से उदर बढता तो मूर्ख लोग भोग विलास की निंदा करते वैसे ही रामनाम की पंडित ज्ञानी सराहना करते और उससे प्रगटे हुए चिन्ह देखकर मूर्ख लोग निंदा करते।।३।

जे वा बस्त गोढ मे आछी ।। लेवाळा क्यूँ भूंडा रे लो ।।
के सुखराम भेद बिन मूरख ।। निंद्या करे कर बूडारे लो ।। ४ ।।

जो वस्तु मूल में अच्छी है उस अच्छी वस्तु लेनेवालो को बुरा कैसे कहते?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुर्ख को अच्छे वस्तु के परिणाम की समझ नहीं है इसलिए निंदा कर-कर के डूबते है। इसीप्रकार रामनाम को अच्छा कहते परंतु रामनाम लेने से उपजे हुए परिणाम जानते नहीं और बुरा कह कहके निंदा करते तथा भवसागर में डूब मरते हैं ।।।४।।

२०६

।। पदराग बसन्त ।।

कोई अेसा हो जन संत सुजाण
कोई अेसा हो जन संत सुजाण ।। निज निरगुण सेव बतावे आण ।। टेर ।।

निजपद की,सतस्वरुप निरगुण पद की भक्ति बतानेवाले कोई अच्छा जानकार संत है क्या?जो मुझे निजपद की,निर्गुण पद की भक्ति बताएगा। ।।टेर।।

जप तप तीरथ धाम सोय ।। पुर जिग ज्योग सब बास जोय ।।
अे सब रीत सुरगुण माँय जाण ।। चरच पूज कर जप ठाण ।। १ ।।

जप,तपस्या,तिर्थ,धाम,सुरपुर,नरपुर,नागपुर,काशी,कांची,माया,अयोध्या,मथुरा,जगन्नाथ,द्वारका ये सप्तपूरियाँ,यज्ञ,योग,पूजा,अर्चना,जाप करना यह सभी सर्गुण की भक्तियाँ है। तीन लोक के पद की भक्तियाँ है। यह कोई भी सतस्वरुप निर्गुण पद की भक्ति नहीं है। ।।१।।

सुण पढत ग्यान अधभुत कोय ।। सुण बाय बेण बोहो बिध होय ।।
जप जाप सुरत मन करे सेव ।। धुन ध्यान ज्या लग हो माया देव ।। २ ।।

अदभुत ज्ञान पढना,सुनना,सीखना,अनेक प्रकार के श्लोक कंठस्थ उच्चारण करना,जप जाप करना,सूरत से ध्यान करना,मन से ध्यान करना,शब्द की ध्वनि प्रगट करना यह सभी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन सर्गुण माया देवोंकी भक्ति है यह सतस्वरुप देव की भक्ति नहीं है। ।।२।।

ओऊँ शब्द के सोऊँ सोय ।। सुरगुण मूळ तो अेज होय ।।
मंमकार सो माया जाण ।। मन जीभ चढे सो सरब ठाण ।। ३ ।।

ओअम साँस शब्द भृगुटी में चढाना यह भी सरगुण भक्ति है कारण ओअम शब्द यह सरगुण का मूल है। ओअम से ही बावन अक्षर निपजे है। रक्कार छोड्कर ममंकार शब्द की सभी भक्तियाँ माया की भक्तियाँ है। मन से और जीभ से जो भक्ति की जाती वे सभी भक्तियाँ सरगुण भक्ति है। ।।३।।

करद सबद के अरध सोय ।। मन सुरत पढत तो माया होय ।।
चित कीया होय बात ठाण ।। जब लग सुरगुण असल बखाण ।। ४ ।।

करद शब्द याने रामनाम का आधा ररंकार शब्द मन और सुरत,चित से पढना समझना यह भी अस्सल सरगुण है यह समझो। यह आधा शब्द निर्गुण है यह मत समझो। ।।४।।

भजन पूर कर राम गाय ।। सत नुरगुण शब्द हे सेहेज माँय ।।
मत भूल केबताँ सुणे जोय ।। सुण अरध शब्द गम रटया होय ।। ५ ।।

जो भरपूर भजन करके रामनाम को गाते है उससे घट में अखंड्ति प्रगट होनेवाला ररंकार अर्ध शब्द सत है,निर्गुण है। जीभ बंद करने से बंद नहीं होता या मन और सूरत भटकने से बंद नहीं होता वह सहज में घट में प्रगटे रहता है। दूजे जिसे अर्ध शब्द कहते उनके कहने में भूलो मत। यह अर्ध शब्द की समज जीभ से रामनाम रटने पर घट में अखंड्ति होती है। ।।५।।

जन ओर आण कर कहे कोय ।। मन जीभ समझ ज्यो तुरत होय ।।

जन केत देव सुखदेव जान ।। ऊ अरध शबद नहि भरम मान ।। ६ ।।

दूसरे संत दूसरे अनेक ज्ञान कहते। वे ज्ञान कानोंसे सुने जाते,मन बुध्दी से समझे जाते,जीभ से बोले जाते और मन में तुरंत समझे जाते यह अर्ध शब्द नहीं है,यह भ्रम है यह समझो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।६।।

१३

।। पदराग धमाल ।।

अबगत हरी सब ऊपरे हो

अबगत हरी सब ऊपरे हो ।। ज्याँ सुं ओऊँ सोऊं सक्ति होय ।। टेर ।।

यह अविगत रामजी,ओअम,सोहम्,शक्ति,ब्रम्हा,विष्णू,महेश के उपर है। ओअम,सोहम्, शक्ति,ब्रम्हा,विष्णू,महेश ये सभी अविगत रामजी से उत्पन्न हुए है। ।।टेर।।

ब्रम्हा बिष्ण महेसर देवा ।। रामकृष्ण अवतार ।।

दे धर इन सम को नहीं हो ।। दीठा दिष्ट पसार ।। १ ।।

इस अविगत हरि के समान ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ति तथा मनुष्य देह धारण किए हुए रामचंद्र,कृष्ण आदि कोई नहीं है यह मैंने तीन लोक चौदा भवन में दृष्टि फैलाकर देखा। ।।१।।

पीर तिथंगर देवत सारा ।। इन बिच कसर न काय ।।

इण ऊपर सोई साईयाँ हो ।। से हर सब के माय ।। २ ।।

सभी पीर,तिर्थकर,तैंतीस करोड देवता,राजा इन्द्र इन के उपर जो स्वामी है वह स्वामी सभी के अंदर विराजमान है इसमें कोई कसर नहीं है। ।।२।।

उपजत खपत पाँच के मांही ।। सो सब माया स्वरूप ।।

याँ कर फळ गत पाइयो ।। नाँनाँ बिध का चूप ।। ३ ।।

पाँच तत्वोंसे उपजते और पाँच तत्वोंमें विलीन हो जाते वे सभी ब्रम्हा,विष्णु,महेश, रामचंद्र,कृष्ण,पीर,तैंतीस करोड देवता,इंद्र आदि माया है। ये अविगत नहीं है। इन सभी ने अपने कर्म के फल से नाना प्रकार के पाँच तत्व के देह प्राप्त किए है। ।।३।।

पाँच पचिस इनाको हर हे ।। तां ऊपर वे होय ।।

कहे सुखराम ब्रम्ह कूं जाण्या ।। लारे रहयो नहि कोय ।। ४ ।।

पाँच तत्व,पच्चीस प्रकृति इनके उपर जो होनकाल हर है उसके भी उपर यह सतस्वरुप हर है। ऐसे सतस्वरुप ब्रम्ह को जानने पर पीछे कुछ भी जानने का बाकी नहीं रहता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।४।।

१०१

।। पदराग बसन्त ।।

धिन धिन हो धिन परम धाम

धिन धिन हो धिन परम धाम ।। जासे किसन देव चल आवे राम ।। टेर ।।

जिस परमधाम से कृष्ण और रामचंद्र जगत में शरीर धारण करते वह परमधाम धन्य

है,धन्य है। ।।टेर।।

सरब शिष्ट की बाय मूळ ।। पाँच तत्त की शुन्य चूळ ।।
शुन्य मूळ से ब्रम्ह होय ।। ताय शीश नहिं अवर कोय ।। १ ।।

सभी सृष्टी तथा पाँच तत्वोंका ब्रम्हशुन्य यह मूळ है। वही सतस्वरुप ब्रम्ह है। उसके ऊपर कोई नहीं है। ।।१।।

ब्रम्हा बिष्णु महेस देव ।। अष्ट पोर हर आई सेव ।।
शेष लोक पयाळ होय ।। नित आठ पोर लव लीन जोय ।। २ ।।

स्वर्गादिक में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा सभी देवता आठो प्रहर उस हर की भक्ति करते है तथा पाताल में शेषनाग नित्य आठोप्रहर उस ब्रम्ह में लिन रहता है । ।।२।।

पीर जैन अवतार जोय ।। ब्रम्ह ब्रम्ह कर रहे रोय ।।
आकार धार तिरलोक मॉय ।। समझवान रहे ब्रम्ह गाय ।। ३ ।।

सभी पीर,सभी तीर्थंकरी जैन अवतार,सभी त्रिगुणी मायावी हिंदू अवतार ब्रम्ह-ब्रम्ह कर ब्रम्ह पाने का विरह करते है। तीन लोक में जो मनुष्य आकार धारण कर सतस्वरुप ब्रम्ह को गाते है, वे समझवान है,चतुर है,होशियार है। ।।३।।

सिष्ट सेंग तुझ मांहि होय ।। काळ जम सब जख लोय ।।
के सुखदेव कहा कहुँ आय ।। बड़ा बड़ा तुझ पुकाऱ्याँ जाय ।। ४ ।।

तीन लोक, चौदा भवन,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार,सभी नर-नारी,काल,राक्षस सभी सतस्वरुप ब्रम्ह में है। ऐसे ब्रम्ह का मैं क्या और कैसे महिमा करु?सृष्टी के बडे बडे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,रामचंद्र,कृष्ण,शेषनाग आदि सभी उसे नित्य पुकारते रहते इससे उसकी महिमा समझो ऐसा सभी ज्ञानी,ध्यानि,नर-नारी को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे। ।।४।।

१५६

।। पदराग काफी ।।

इण मन कूं दोस न कोय

इण मन कूं दोस न कोय ।। सुण समरथ साहिब सांईयाँ हो ।। टेर ।।

समर्थ स्वामी,साहेब सुनो,मुझे मेरे मन का कोई दोष नहीं दिखता। मन ने जो भी कर्म किए तब आप उसके संग थे,फिर इस मन का दोष कैसे हो सकता?यह तुम समझाओ। ।।टेर।।

आपीज क्रता आपीज हरता ।। आपीज का सब स्हौ काम ।।
तीन लोक पंच भूत सकळ ही ।। तम सिमरत राम ।। १ ।।

कर्म करनेवाले कर्ता आप ही हो,कर्म हरनेवाले हर्ता आप ही हो। सभी कर्म भी तुम ही हो। तीन लोक चौदा भवन और पाँच तत्व ये माया भी सभी समर्थ रामजी आप ही आप हो। ।।१।।

बेण कहयाँ जांहाँ.आप संगी था ।। सुण्यो जाँही हर साथ ।।
साहिब बिन मन अेकलो वो ।। काहा करी को बात ।। २ ।।

मैं कुछ वचन बोला वहाँ पर भी तुम ही मेरे संग थे और मैंने कही वचन सुने वहाँ पर आपही साथ में थे। आप के सिवा इस मन ने कही पर भी कुछ नहीं किया। ।।२।।

चाल गयो ज्यांहाँ हरी पास था ।। कियो काम संग होय ।।
तम सें बिछट क्हौ काहा कियो ।। समझ दोस दो मोय ।। ३ ।।

यह मन कर्म करने के लिए चलकर गया तब वहाँ पर भी रामजी आपही पास थे और कोई कर्म किया तो भी आप ही संग थे। आपसे अलग होकर कौनसा काम मन ने किया। यह तुम समझकर मेरे मन को दोष दो। ।।३।।

हुकम तुमारो तुम ही साथे ।। में पायक याहों सांई ।।
आगे लारे क्हे सुखदेवजी ।। तुम बारे तुम मांई ।। ४ ।।

इस मन ने जो कुछ भी किया वह तुम्हारे आदेश से किया। यह मन तो आप का हुकुम बजानेवाला चाकर था। आगे-पीछे,अंदर-बाहर,जहाँ-वहाँ मन के साथ आपही हुकुम देनेवाले थे फिर यह मन दोषी है यह कैसे हो सकता? ।।४।।

४११

।। पदराग बिलावल ।।

ऊठ परोडे मांगणें

ऊठ परोडे मांगणें ।। तेरा जन जावे ।।
सुण सांई साची कहुँ ।। तुज लाज न आवे ।। टेर ।।

हे साँई,रामनामी संत तेरे भक्त है ऐसे तेरे संत को प्रतिदिन उठते ही दुनिया से रोटी माँगने जाना पडता। मैं सत्य कहता हुँ हे रामजी,तेरे संत माँगने जाते इसकी तुझे लाज क्यों नहीं आती? ।।टेर।।

तम मिलीयो को गुण कहा ।। भिछक जन बाजे ।।
मेरो तो कुछ सोच नहीं ।। तेरो बिड़द लाजे ।। १ ।।

रामजी के भक्त होने के पश्चात भी रोटी क्यों माँगने आते हो?तुम्हें सब का उदर भरनेवाला रामजी घर बैठे ही क्यों नहीं देता?ऐसी दुनिया पुछ्ती है। मुझे तो इसकी कोई चिंता नही परंतु तेरा बिड्द इसमें लजाता हैं। ।।१।।

दुनिया सब सारी क्हे ।। मांगण क्यूं जावे ।।
जे इनकूं साहेब मील्या ।। बेठा नहि खावे ।। २ ।।

आप सभी का उदर भरते हो और आप तो संत के घट में प्रत्यक्ष प्रगटे हो फिर भी संत को भिक्षा माँगने जाना पडता,तो संत में आपके प्रगटने का गुण क्या रहा? मुझे मैं भीख माँग रहा हुँ इसका सोच नहीं। जो तेरा सभी का उदर भरने का बिड्द है वह लाज रहा है इसका सोच है। रामजी के संत है और रामजी ही सबका पेट भरते हे फिर ये बैठे बैठे

क्यों नहीं खाते?ये माँगने क्यों जाते है?ऐसी दुनिया के सारे लोग कहते है । ।।२।।

हरजन होय मांगत फीरे ।। दुनिया के तांई ।।
क्या सोभा हर आप कूं ।। सुण लीज्यो सांई ।। ३ ।।

आपका संत बनने के पश्चात मुझे माया के जगत से माँगना पड्ता इसमें आपकी क्या शोभा दिख रही यह साँई तुम सुनो। ।।३।।

चित्त मन मेरो जीव ओ ।। ब्रम्हंड चड़ जावे ।।
अब मो मे क्या चूक हे ।। अजूं भीक मंगावे ।। ४ ।।

मेरा चित,मेरा मन संसार में,पत्नि,पुत्र में,धन में न रहते तेरे ब्रम्हंड देश में चढ गया अब मुझमें क्या गलती रही की मुझे भीख माँगने को कहते हो। ।।४।।

थे चाडया म्हे चड गया ।। ब्रम्हंड के मांहि ।।
अब हर कहो क्या चूक हे ।। तम रीज्या नाहि ।। ५ ।।

आपने मुझे ब्रम्हांड में चढाया इसलिए मैं ब्रम्हांड में चढ गया अब हर मुझे कहो मेरी क्या गलती है कि,आप अभी भी प्रसन्न हुए नहीं। ।।५।।

म्हे तो दुख सुख आदऱ्या ।। हर राम द्वाई ।।
बिड़द काज सुखराम के ।। क्रणा हर गाई ।। ६ ।।

मैं तो दु:ख-सुख पर सरीखा प्रेम करता हूँ,दु:ख-सुख में फरक नहीं करता। ये मैं आपकी कसम खा कर कहता हूँ। हे रामजी,आप के बिड्द के कारण करुणा गायी हूँ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।६।।

२९८

।। पदराग पिचकारी ।।

रंग में खेलूं रामया सूँ होली
रंग में खेलूं रामया सूँ होली ।। हो सुध भुली ।।
सुन मे खेलू साहेब संग होली ।। हो सुध भुली ।। टेर ।।

मैं रंग में रामजी के साथ सतस्वरुप सुन्न में जाकर होली खेलती। साहेब के साथ होली खेलने में, मैं सुध-बुध भुल गई। ।।टेर।।

पुरब दिसा ने बाजे ।। अनहद बाजा ।।
पिछम दिसाने बाजी मुरली ।। हो सुध भुली ।। १ ।।

मेरे घट में पूर्व दिशा में अनहद बाजे बजते और पिछम दिशा में मुरली बजती ऐसे अनहद बाजे और मुरली के आनंद में मेरी सुध-बुध भूल गई। ।।१।।

ग्यान की गुलाल ऊडे ।। प्रेम का पीचकारा ।।
म्हारे करणी केसर क्याऱ्याँ फुली ।। हो सुध भुली ।। २ ।।

मेरे घट में ज्ञानरुपी गुलाल उड रहे रंग रुपी प्रेम के पिचकारे छुट रहे। मेरी क रणी केसर की क्यारियाँ फूली। इसप्रकार होली के आनंद में मैं सुध बुध भूल गयी ।।२।।

सबद ऊजाळा म्हारा || सतगुरू सुझे ||
म्हारे भाव बसंत रूत फुली || हो सुध भुली || ३ ||
मेरे घट में सतस्वरुप का उजाला हुआ और उस उजाले में मुझे सतगुरु दिखे। मेरा भाव वसंत ऋतु के समान फूला। इसप्रकार के होली के आनंद में मैं सुध बुध भूल गयी ।।३।।

सुरत निरत मन || निजमन खेले ||
म्हे तो पाँच सखी संग लुँली || हो सुध भुली || ४ ||
मैं मेरी सूरत,निरत,मन,निजमन और मेरी पाँच सखियों के साथ मिलकर होली खेली। इस होली के आनंद में मैं सुध बुध–भूल गयी ।।४।।

काम क्रोध सिर || करम क जोडा ||
म्हे तो दु:खड़ा रे सीर डारूँ धूली || हो सुध भुली || ५ ||
मैंने काम,क्रोध तथा कर्मकाल ये दु:ख देनेवालो के उपर धुल मिट्टी डाली इसप्रकार के आनंद मे मै सुध–बुध भुल गई ।।५।।

के सुखदेव गुरू || सुखडारा सागर ||
म्हारी सुरत स्हेंसर धारा झूली || हो सुध भुली || ६ ||
आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मेरे सतगुरु सुखोंके सागर है उनमें मेरी सूरत लगी और वहाँ हजारो धाराओ में मैं न्हाई। ऐसा आनंद लिया जिसमे मैं सुध भूली ।।६।।

३२४

|| पदराग होरी ||

सईयाँ खेलो फाग होरी आई
सईयाँ खेलो फाग होरी आई || आज आछी पूळ पाई ||
आतो रूत बसंत चल जाई || टेर ||
सईयाँ याने रामजी को चाहनेवाले पाँच इंद्रियाँ और पच्चीस प्रकृति ये तीस सईयाँ को आत्मा नारी कह रही है कि,सईयाँ आज फाग खेलो होली आई है याने मनुष्य देह मिला है। सतस्वरुप समज के साथ मनुष्य देह मिला है याने वसंत ऋतु आया है। फाग याने होली खेलने का अच्छा मौका आया है। भजन करने का अच्छा मौका आया है यह वसंत ऋतु निकल जाने पर होली खेले नहीं जाती ऐसे ही भजन करने का मौका आया है,यह हाथ से निकल रहा है। सतगुरु का शरणा मिलने का समय आया है। सतगुरु का शरणा हाथ से छुट रहा है। ।।टेर।।

अबगत देव निरंजण सुन में || ज्यां संग खेलो जाई ||
अनंत कोट साधु जन खेले || नाद घुरे अेक घाई || १ ||
अविगत,निरंजन देव जहाँ माया की पहुँच नहीं ऐसे सुन्न में जाकर अविगत,निरंजण देव के साथ फाग याने होली खेलो। अनंत कोट साधुओंने यह होली अविगत,निरंजन के साथ सुन्न में खेली है जैसे यहाँ होली खेलने के जगह नगाडे बजाते है ऐसे सुन्न में बिना खंडित

जींग नाद के नगाडे बज रहे है। ।।१।।

सिल संतोष साच लियाँ मनवो ।। भजे हे निरंजण राई ।।
अंतर माहे अखंड धून लागी ।। गिगन मंडळ घर माई ।। २ ।।

यह मन सील(ब्रम्हचर्य),संतोष और सांच(विश्वास)लेकर,निरंजन का भजन करता है। उस भजन की अंत:करण में,अखण्ड ध्वनि लग गई। वह ध्वनि खंडित होती नहीं। वह ध्वनि गिगन मंडल के घर में दसवेद्वार में ध्वनि लग गई। ।।२।।

सास ऊसास पिचरका छुटे ।। ग्यान गुलाल ऊडाई ।।
निज कण नीर नांव ले मिलीया ।। आठ पोर अेक साई ।। ३ ।।

जैसे यहाँ होली खेलने में रंगो के पानी की पिचकारियाँ छुटती ऐसे साँस उसास में राम नाम की पिचकारियाँ छुट रही। जैसे होली में गुलाल उडाते ऐसे मेरे घट में मेरे आत्मा पर सतस्वरुप ज्ञानरुपी गुलाल उड रहे है। जैसे होली मे रंग और पानी मिलाकर घंटो पिचकारियाँ छोड्ते है वैसेही प्रेमरुपी जल में अविगत का नाम धारण कर आठ पहर याने चोबीसो घंटे एक सरीखी राम नाम की पिचकारियाँ छोडी है। ।।३।।

सब तन सोझ अगम घर पूंता ।। आद हमारे मांई ।।
जन सुखराम मगन रम हुवा ।। राम मिल्या हर आई ।। ४ ।।

जैसे भारी माहोल मे पति को खोजकर पती के घर पहुँचती है और पति के साथ रमकर मग्न हो जाती है ऐसे मैं भी सभी शरीर खोजकर अगम घर पहुँचा,मेरे आद घर पहुँचा वहाँ मुझे रामजी मिले। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं रामजी के सत्तशब्द में मग्न होकर रम गया। ।४।

३८९

।। पदराग होरी ।।

सुन मे खेलूं साहेब संग होरी
सुन मे खेलूं साहेब संग होरी ।।
और सकळ सें तोड़ी ।। में तो अेक रामईया सें जोड़ी ।। टेर ।।

मैं शुन्य के बीच जाकर,साहब से(मालिक के)साथ होली खेलता।(भक्ति करता)सिर्फ मालिक से प्रेम प्रिती करता और मैंने बाकी दूसरे सभी से प्रेम तोड डाले,सिर्फ रामजी से ही प्रेम जोडा। ।।टेर।।

सब सखियां मिल ओ अर्थ बांद्यो ।। भली ही बात आ होरी ।।
वा पूळ पोहोर घड़ी दिन धीन्न हे ।। हम हर व्हेली जोड़ी ।। १ ।।

सभी सखियाँ (पांच,इंद्रिया,पच्चीस प्रकृती मिलकर,यह अर्थ लगाया)की,यह अच्छी होली, (अच्छा समय)आया है। यह उत्तम बात है,मेरी और हर(रामजी)की जोडी बनेगी,(रामजी मुझे मिलेंगे)और रामजी में,मैं मिल जाऊँगी ऐसा योग आयेगा। वह पल और घडी तथा वह दिन धन्य है की,मेरी और रामजी की जोडी होगी। ।।१।।

पाँच पच्चिस मिली सब सईयाँ ।। ऊलट सबद गेहे लोरी ।।
सुर नर देव घाट सब लांग्या ।। बेण ब्रम्ह सूं कोरी ।। २ ।।

पाँच इंद्रिया और पच्चीस प्रकृती ये सब,यानी तीस सखियाँ मिलो और उलटकर शब्द को पकड लो।ये सभी घाट सूर(देव),नर(मनुष्य)व देव(ब्रम्हा,विष्णु,महादेव)इन सबको पार करके सतस्वरुप ब्रम्ह से बाते करने लगा। ।। २ ।।

त्रुगटी स्हेर जांहाँ हर स्मरथ हे ।। जाय महोला दोरी ।।
हरी रंग राग बिलास करीजे ।। अनंत सुख तम लोरी ।। ३ ।।

त्रिगुटी शहर में हर(रामजी)समर्थ है,वहाँ त्रिगुटी में जाकर रामजी से रंग–राग विलास करो,उस योग से पाँच और पच्चीस सखियोंने अनंत सुख लिए। ।। ३ ।।

खेलो हो जाय पिया संग गडमे ।। बीचे पडदा मती दोरी ।।
के सुखराम हरी सूं हिल मिल ।। लोथ पोथ होय रोरी ।। ४ ।।

गढ के उपर(ब्रम्हांड में)जाकर,पिया के संग(मालिक के साथ)होली खेलो,(भक्ति करो), मालिक के और तुम्हारे बीच में,दूसरा परदा याने दूसरा ज्ञान बीच में लाओ मत,वहाँ तो केवल रामजी से,हिल–मिलकर,रामजी से लथ–पथ होकर(एकमेल होकर)रहो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

२८०

।। पदराग बिहागडो ।।

प्रभूजी मै हार चल्या इन मन सूं
प्रभूजी मै हार चल्या इन मन सूं ।।
दे दे ग्यान पचे पच हारी ।। मोह न छाडे धन सूं ।। टेर ।।

प्रभुजी मैं मेरे मन से हार गया। इसे धन का मोह बहुत है। मैं उसे समझाता की अंतिम समय पर ये धन साथ नहीं चलता परंतु उसको पाने के लिए किए हुए सभी निच उच कर्म दु:खोंके धक्के देने साथ में चलते। मैं उसे ज्ञान दे देकर थक जाता फिर भी धन से मोह नहीं छोडता। ।।टेर।।

केहे केहे जीभ हमारी घस गई ।। अेक न माने काई ।।
जुग की बात सुणत प्रवाणे ।। यो तन धन अरपे जाई ।। १ ।।

मेरे मन को ज्ञान देते देते मेरी जीभ घस गयी फिर भी मेरी एक बात मानता नहीं और जगत की धन व विषय रस लेने की,प्राप्त करने की बात सुनते ही अपना तन हर कष्ट मेहनत करन में लगा देता। ।।१।।

हटक हटक मेरा दिल थाका ।। पाल पाल चित्त सोई ।।
बरज्यो रहे नहिं मन दुष्टी ।। बिषे पिये संग लोई ।। २ ।।

इस मन को रोक रोक कर मेरा दिल थक गया,मेरा चित थक गया,परंतु वह रुकता नहीं ऐसा मेरा मन बहुत ही दृष्ट है। यह दृष्ट लोगो के संग जा जाकर विषय रस पिता है ।२।

ब्याव बिरध करे जब सूरा ।। तन धन बळ संभावे ।।
हरकी भगत भजन की बेळा ।। सो निकट न नेड़ा आवे ।। ३ ।।

घर में शादी या दुसरा माया का काम रहा तो खर्चा करने में शुरविर बन जाता और वहाँ शरीर व धन का पुरा बल लगता। हरी के भक्ति के समय या कार्य के समय जरासा भी निकट नहीं आता याने जरासा भी बल नहीं दिखाता ।।३।।

निज मन करे पुकार गुसाँई ।। सुण हर साहिब मेरा ।।
ओ मन सिकळ बिकळ होय बोले ।। तब बिड़द लजावे तेरा ।। ४ ।।

हे गुसाई,हे हरजी,हे साहेब,आप मेरी पुकार सुनो। यह मन भक्ति के लिए डावाडोल रहता इसके कारण मैं तेरी भक्ति चाहकर भी कर नहीं सकता। इसलिए मैं भक्ति करु ऐसा मुझे बल दो। अगर मैं भक्ति नहीं कर सका तो तेरा भक्तों को भक्ति के लिए बल देनेका बिड्द लजाया जाएगा ।।४।।

दया करो हर आद गुसाँई ।। जन कूं सरणे लीजे ।।
के सुखराम साँम इस मन कूं ।। जन के बस हर कीजे ।। ५ ।।

तो रामजी,आदि गुसाई मेरे उपर दया करो और मुझे आपके शरण में लो। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वामी से बोले कि,आप आपका भजन करने के लिए मेरे मन को मेरे बस कर दो ।।५।।